विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग - द्वितीय विषय - हिंदी

एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

दिनांक - 21 - 08- 2021

ईमानदारी का फल

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपको ईमानदारी का फल कहानी के बारे में अध्ययन करना है जो इस प्रकार है-

शब्दार्थ :-

- **लकड़हारा = लकड़ी काटने वाला**
- **गट्ठर = लकड़ियों का पौधा**
- **अदृश्य = दिखाई न देना**
- **इनकार = मना करना**

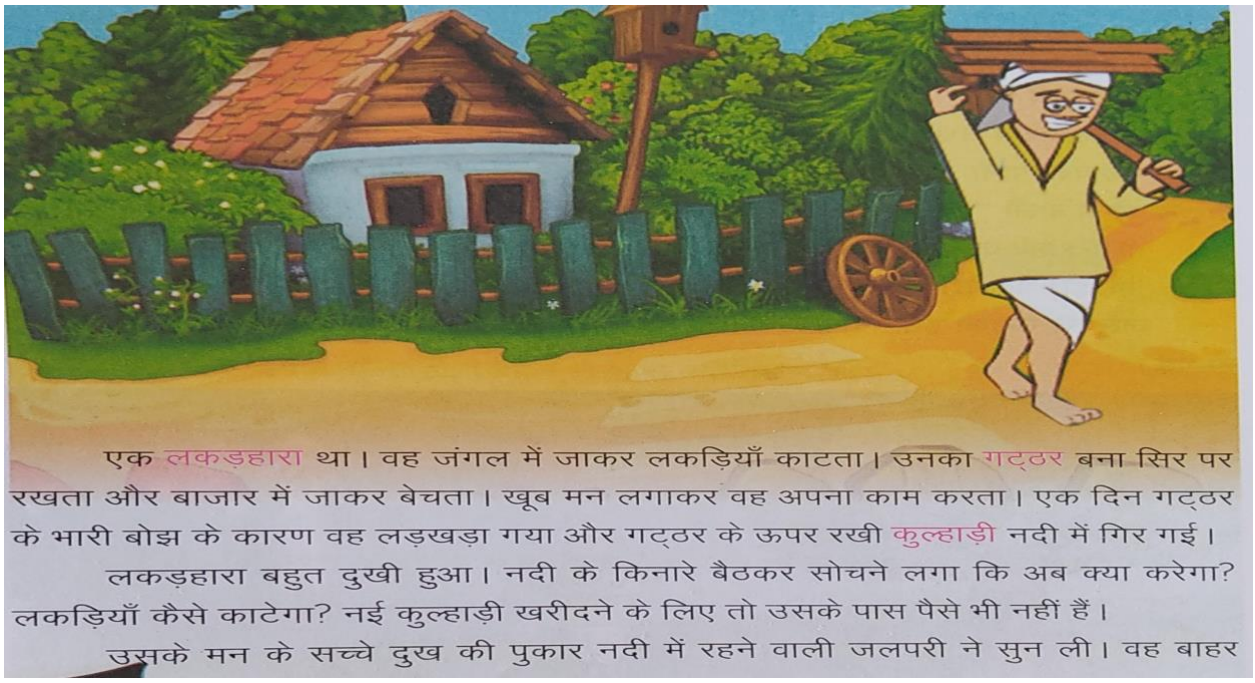

एक लकड़हारा था। वह जंगल में जाकर लकड़ियाँ काटता। उनका गट्ठर बना सिर पर रखता और बाजार में जाकर बेचता। खूब मन लगाकर वह अपना काम करता। एक दिन गट्ठर के भारी बोझ के कारण वह लड़खड़ा गया और गट्ठर के ऊपर रखी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई।

लकड़हारा बहुत दुखी हुआ। नदी के किनारे बैठकर सोचने लगा कि अब क्या करेगा? लकड़ियाँ कैसे काटेगा? नई कुल्हाड़ी खरीदने के लिए तो उसके पास पैसे भी नहीं हैं।

उसके मन के सच्चे दुख की पुकार नदी में रहने वाली जलपरी ने सुन ली। वह बाहर

आई। लकड़हारा अचानक अपने सामने आई जलपरी को देखकर हैरान रह गया। उसे कुछ न सूझा।

सोने की एक कुल्हाड़ी दिखाते हुए उसने लकड़हारे से पूछा, ''क्या यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है?''

लकड़हारे ने उत्तर दिया, ''नहीं, यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है।''

जलपरी पानी में अदृश्य हो गई। फिर वह चाँदी की एक कुल्हाड़ी लेकर आई और लकड़हारे से बोली ''क्या वह तुम्हारी कुल्हाड़ी है?'' लकड़हारे ने इस बार भी इनकार कर दिया।

तीसरी बार जलपरी लोहे की कुल्हाड़ी लेकर आई, तो लकड़हारा खुशी से उछल पड़ा और बोला, ''हाँ, हाँ! यह मेरी कुल्हाड़ी है।''

जलपरी उसकी ईमानदारी से प्रसन्न हुई और उसे तीनों कुल्हाड़ियाँ देकर पानी में गायब हो गई।

गृहकार्य

दिए, गए अध्ययन अध्ययन सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें -

****

ज्योति